DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2
LECTURE-11

Leadership

नेतृत्व

शीलगुण सिद्धांत (Trait Theory)

शीलगुण सिद्धांत को महान-मानव सिद्धांत भी कहा जाता है | नेतृत्व की व्याख्या करने के प्रारम्भिक समय में ही इस सिद्धांत का जन्म हुआ| यह सिद्धांत इस विश्वास पर आधारित है कि नेता जन्मजात होता है ,बनाया नहीं जाता | इस सिद्धांत के अनुसार महान मानव या नेता में कुछ ऐसे ख़ास –ख़ास जन्मजात शीलगुण होते है जिसके कारण वह अपने अनुयायियों से अधिक प्रभावकारी होता है तथा समूह का नेता

बन जाता है |इन शीलगुणों के सेट के कारण नेता हर परिस्थिति में प्रभावकारी होता है |मार्टिन लुथर किंग,महात्मा गांधी,हिटलर ,नेपोलियन आदि नेताओ में कुछ ऐसे ही असाधारण शीलगुण थे जो उनके अनुयायियों में नहीं थे तथा जिनके करण वे एक प्रभावकारी नेता के रूप में लोगो के सामने उभर कर आये |शीलगुण सिद्धांत के दो प्रमुख पूर्व कल्पना (assumpitons) है जो निम्नांकित है :-

(i).इस सिद्धांत की पहली महत्वपूर्ण पूर्व कल्पना यह है की नेतृत्व एक सामान्य गुण होता है |एक व्यक्ति जो नेता बन गया वह सभी परिस्थितियों एवं समय में नेता बना रहेगा |कुछ ऐसे प्रायोगिक सबुते है जो इस पूर्व कल्पना का समर्थन करते है |जैसे ,कार्टर (carter1953) तथा गिब्ब (gibb1947) ने अपने प्रयोगों में पाया की जब एक समूह से नेता को हटा कर दुसरे समूह में रख दिया जाता है तो वह वहाँ भी समूह का नेता बन जाता है |परन्तु अनेको ऐसे अध्ययन हुए है जिससे यह साबित हो जाता है की नेतृत्व एक सामान्य गुण नहीं है |

कार्टर तथा निक्सन (carter & nixon1949) तथा मेरी (merei1949)द्वारा किये गये महत्वपूर्ण अध्ययनों ने साबित कर दिया है की नेतृत्व एक सामान्य गुण नहीं है और एक परिस्थिति में नेता होना इस बात की कोई गारंटी नहीं देता है की वह अन्य परिस्थितियों में नेता होगा |

(ii)इस सिद्धांत की दूसरी पूर्व कल्पना यह है की नेता में कुछ असाधारण शिलगुण होते है जो उन्हें अपने अनुयायियों से भिन्न कर देते है |

ऐसे अनेको अध्ययन किये गये है जिनमे यह स्थापित करने की कोशिश की गयी है की कौन –कौन वैसे शीलगुण है जिनके होने से व्यक्ति समूह का नेता बन जाता है |स्टॉगडील (stogdill1948) ने इस सम्बन्ध में किये गये 124 अध्ययनों के परिणामों का तथा मान्न ने 125 ऐसे अध्ययनों का सर्वे किया और इन लोगो ने पाया की तीन तरह के शिलगुण प्रमुख है जिसके होने पर कोई भी समूह का नेता बन सकता है –शीरीरिक शिलगुण,व्यक्तिगत शिलगुण तथा अर्जित शिलगुण |

शारीरिक शिलगुण में व्यक्ति के शारीरिक आकर व्यक्ति तथा आयु आदि पर अधिक बल डाला गया है |टरमैंन (1940) पेंट्रिज (patridge 1961) ,काल्डवेल (1953) आदि द्वारा किये गये अध्ययनों से नेतृत्व के अभिर्भाव में इन गुणों की महत्ता साबित हो गयी है|व्यक्तित्व शिलगुणों में बुद्धी,आत्मविश्वास ,शब्दाउम्बर ,प्रभुत्व ,समायोजन ,सामाजिकता ,परिश्रमप्रियेता,दूरदर्शिता चमत्कार तथा कल्पना शक्ति आदि प्रधान है |कुछ मनोइतिहासज्ञ का कहना है की अधिक शक्तिशाली नेता का उद्भव अपने आप में देखे गये कमजोरियों को दूर करने का प्रयास से होता है|वल्फन स्टीन (1967) ने लेनिन ,ट्रोट्स्की तथा महात्मा गाँधी के इतिहास का अध्ययन किया और पाया की किशोरावस्था में इन लोगो

को महत्वपूर्ण पुरूषों से काफी संधर्ष करने में असमर्थता ने वाद में इनलोगो को एक शक्तिशाली नेता के रूप में उभरने में मदद किया कुछ ऐसे अर्जित शिलगुण भी होते है जो व्यक्ति को नेता बनने में मदद करता है |ऐसे शिलगुणों में समूह स्थिति एक महत्वपूर्ण शिलगुण है |

शिलगुण सिद्धांत की व्याख्या आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिक को मान्य है शायद नहीं |इसका प्रमुख कारण है की इस सिद्धांतकी कुछ कमजोरियाँ है जिनमे निम्नांकित प्रमुख है:-

(i)इस सिद्धांत द्वारा वैसे सार्वत्रिक शिलगुणो का पता नहीं चलता है जो सभी नेताओं में समान रूप से पाए जाते है हालाँकि ऐसे शिलगुणों का पता लगाना इस सिद्धांत का एक मुख्य उद्देश्य है |इतना ही नहीं ,नेतृत्व व्यवहार एवं शिलगुणों के बीच समाज मनोवैज्ञानिको ने बहुत निम्न सहसंबंध पाया है जिस से इस तथ्य की ओर इशारा होता है की मात्र शिलगुणों के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है की कौन समूह का नेता हो सकता है |

(ii)इस सिद्धांत के समर्थन में किये गये अध्ययनों में असंगति एवं विरोधाभास अधिक है |फलतः बस सिद्धांत को अधिक विश्वसनीय तथा वैध नहीं माना जा सकता है |

(iii)इस सिद्धांत द्वारा इस तथ्य की व्याख्या नहीं हो पाती है की व्यक्ति जिन्हें अपनी जीवन की प्रारम्भिक अवस्थाओं में अधिक संघर्ष

करना पड़ा या जिन्हें असमर्थता का सामना करना पड़ा उसमे से कुछ नेता लोग तो महान नेता जैसे गांधी और लेनिन क्यों बन गये परन्तु अधिकतर लोग छोटा नेता भी क्यों नहीं बन पाए |

इस आलोचनाओं के आलोक में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है की शिलगुण सिद्धांत द्वारा ना तो नेतृत्व के उद्भव की व्याख्या होती है और ना ही उसकी प्रभाव शीलता की |अतः आधुनिक समाज मनोवैज्ञानिको ने इस सिद्धांत को अन्य नए सिद्धांतो द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया है |